2D] म.प्र. में सामान्य उत्पादन एवं सिंचाई तथा शक्ति के उत्पादन को बढ़ाने के लिए नर्मदा घाटी परियोजना की शुरुआत 1985 में की गई। इस परियोजना के अंतर्गत 29 बड़ी, 139 मध्यम एवं 3000 छोटी सिंचाई परियोजना के निर्माण का लक्ष्य तय किया गया। इंदिरा सागर परियोजना इसी का अंग है। इंदिरा सागर परियोजना खण्डवा में नर्मदा नदी पर निर्मित एक बहुत ऊँची बांध परियोजना है।

2E] म.प्र. एक कृषि प्रधान राज्य है। यहां की जलवायु को 11 कृषि प्रदेशों एवं 5 फसल क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। ज्वार, बाजरा एवं धान का उत्पादन मालवा, बुंदेलखंड, एवं बघेलखंड के साथ-साथ बालाघाट, जबलपुर आदि क्षेत्रों में किया जाता है। ज्वार-बाजरा का उत्पादन म.प्र में अग्रणी स्थान है।

2(J) रीवा पन्ना का पठार — भारत का उन्नतशील क्षेत्र है जहाँ की चट्टानों से बहुमूल्य हीरा निकलते हैं तथा चूना पत्थरों से विशाल सीमेंट का उद्योग निर्मित होता है जो भारत के अर्थव्यवस्था निर्माण में सहायक है।

अक्षांशीय एवं देशान्तरीय स्थिति क्षेत्र: 23° 21' से लेकर 79°, 20' उत्तरी अक्षांश तथा 74' 4' से 82° 18' पूर्वी देशान्तर है।

निर्माण — प्राचीन कुडप्पा एवं विन्ध्यन शैल समूह

औसत ऊँचाई — लगभग क्षेत्र में 650 – 750 मीटर है

प्रमुख जिलों — रीवा, पन्ना, दमोह, सतना।

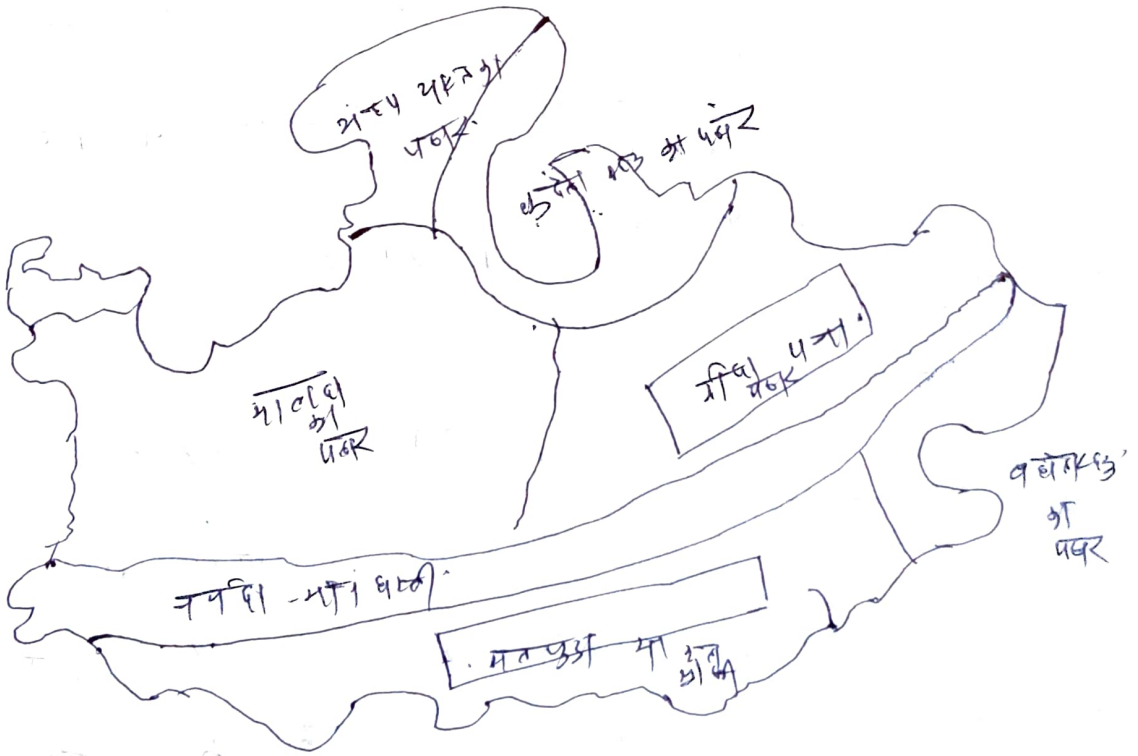

रीवा पन्ना का पठार मध्य से आर्थिक एवं प्राकृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

13]

भारत के भौगोलिक मानचित्र में म.प्र. को तीन प्रमुख भौतिक भागों में वर्गीकृत किया गया है। वस्तुतः नर्मदा सोन घाटी मध्य उच्च प्रदेश का हिस्सा है। जिसकी स्थिति 23°30' से 79°20' उत्तरी अक्षांश एवं देशान्तर 74°, 42' से 82°, 18' पूर्वी देशान्तर तक विस्तृत है।

नर्मदा सोन घाटी एक भ्रंश घाटी है जो गंगा तथा प्रायद्वीपीय भारत के नदियों के मध्य जल विभाजक का कार्य करता है।

यह एक संकरी घाटी है जो उत्तर पूर्व से लेकर पश्चिम तक म.प्र. की लम्बाई नापती नजर आती है। इसमें नर्मदा की घाटी (भारत की सबसे बड़ी रिफ्ट घाटी) अधिक लम्बी और चौड़ी जबकि सोन की घाटी संकरी है।

यह क्षेत्र म.प्र. का 27.92% है, जिसकी औसत ऊंचाई ~~[illegible]~~ भी है।

प्रमुख जिले - मंडला, जबलपुर, नरसिंहपुर, आदि।

प्रवाहित नदियां - नर्मदा, सोन, ताप्ती, तवा।

निष्कर्षतः म.प्र. में नदियों का प्रवाह एवं खनिज संपदा ने आर्थिक एवं सामाजिक संरचना को नया दिया है।

1 H] म.प्र के पांच सर्वाधिक आवश्यक बातें लिखें - उपरोक्त आयोग जलवायु परिवर्तन आदि।

1 O] म.प्र तीन प्रमुख विद्युत केन्द्र

Q. 2

2 A] बहुउद्देशीय योजना उसे कहा जाता है जिसमें नदियों द्वारा अपवाह क्षेत्र के फलस्वरूप कार्य सम्पन्न किया जाता है। अतः ये आर्थिक के उपभोक्ता होते हैं। जिस प्रकार जन संख्या का सघन वितरण उन योजना वाले क्षेत्र में उपस्थित है।

भारत में बहुउद्देशीय योजनाओं का निर्माण उत्तर भारत की तीन प्रमुख नदी प्रणालियों द्वारा होता है।

1. गंगा नदी तंत्र = यह योजना का क्षेत्र कुल भू भाग का 46% है, जो 23% आबादी का भरण पोषण करता है। विस्तार भारत के उत्तर भाग में है।
2. सिंधु नदी तंत्र - इस नदी तंत्र द्वारा भारत के पश्चिमी भाग पंजाब, हरियाणा के योजनाओं का निर्माण होता है।
3. ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र - यह पूर्वी भारत में घाटी में उन योजना का निर्माण करती है। अतः [illegible]

ये बहुउद्देशीय भूमिका आर्थिक क्षेत्र को प्रभावित करती है।

(ज)] कुण्ड्‌ता लावोप करते स्लीपक पशुपालियाँ पाती हुआ किसी- लावोप है। प्रकार - 03 - 1. आर्टिफिक्ट कुएँ, 2. अ- आत्मपात्रा कुएँ बावोप 3. अर्थोक्तित कुएँ बावोप। उदाहरण कार्ड (लाउडन)।

(n)] पालघाट दर्रा पश्चिमी घाट में स्थित है।
- यहाँ से कालीकट- त्रिचूर- कोयम्बटूर रेल का सड़क मार्ग गुजरते हैं।

(i)] - ग्रीन हाउस गैस - CH_4, N_2O, CFC, वाष्प आदि।

(j)] - दून - पर्वतीय संकीर्ण एवं अनुदैर्घ्य घाटी।
उदाहरण - देहरादून, पातली दून।
द्वार - दून द्वार पर्वतीय स्थानाकृति।
उदाहरण - हरिद्वार।

(k)] - मृदा का अर्थ - भूपर्पटी की ऊपरी सतह जो- कार्बनिक, अकार्बनिक तत्वों से निर्मित जीव जन्तुओं व वनस्पतियों के विकास के लिए आवश्यक है।

(L)] जल संरक्षण एवं कृषि सिंचाई को ध्यान रखते हुए वर्ष 2007 में राज्य सरकार द्वारा कृषि उत्पादन हेतु अपनाई की गई योजना।

(m)] सतपुड़ा श्रेणी नर्मदा तथा ताप्ती की भ्रंश घाटी के मध्य स्थित है। यह एक ब्लॉक पर्वत है। सर्वोच्च चोटी - 'धूपगढ़' है।

भाग B

Q. 1

1A]. महासागरों में अत्यधिक तीव्र ढाल वाली लंबी, पतली तथा गहरी गर्त होती है, जिसका निर्माण विवर्तनिकी क्रिया द्वारा प्लेटों के क्षेपण में होता है। उदाहरण मारियाना ट्रेंच (प्रशांत महासागर)

1B] नीलगिरि, अन्नामलाई और पालनी पहाड़ी पर पाये जाने वाले शीतोष्ण कटि वर्षा वनों को स्थानीय रूप में शोला वन कहते हैं। शोला तमिल शब्द 'कोलाई' से बना है, जिसका अर्थ - ठंडा स्थान / जंगल। वृक्ष - मैगनोलिया, लॉरेल

1C] ज्वालामुखी क्रिया के द्वारा निर्मित वृहत ढाल युक्त गुम्बद रूपी संरचना है।
उदाहरण - [illegible] का [illegible] पर्वत।

1D] [illegible] प्रचलन उदाहरण = सूर्य से आने वाली किरण, पृथ्वी से परावर्तित किरण
[illegible] बर्फ से।

1E] हाइड्रोजन ऊर्जा नाभिकीय संलयन द्वारा निर्मित ऊर्जा। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत।

1F] पूर्व का वेनिस - [illegible] का [illegible]।

चित्तौड़ - चित्तौड़ में राजा भोज ने त्रिभुवन नारायण मन्दिर का निर्माण कराया।

कवियों का सम्मान - राजा भोज अपने समय के साहित्य से उच्च कोटि के साहित्य सृजन कर 'कविराज' की उपाधि धारण करता है। विद्वानों कवियों को दरबार में आश्रय देता है। तथा उसके बारे में कहा जाता है भोज जब तक जीवित रहा कवि उसके दरबार में आते रहे और कहते रहे - आज धारा नगरी को आधार प्राप्त है, सरस्वती को आश्रय मिला हुआ है, पण्डित मण्डित है (विद्वानों की कीर्ति) क्योंकि राजा भोज पृथ्वी पर विद्यमान है।

एक जनश्रुति प्रचलित है उसके दरबार में हर कवि को हर श्लोक में एक लाख स्वर्ण प्रदान किए जाते थे।

'अद्य धारा सदा धारा, सदालम्बा सरस्वती।
पण्डित मण्डिताः सर्वे, भोज राजो भुवगते ॥'

लेकिन जब राजा भोज की मृत्यु हुई तब कहा जाता था -

आज धारा नगरी निराधार है, सरस्वती आश्रय विहीन हो गई है पण्डित (विद्वान) खंडित हो गये हैं - क्योंकि भोज पृथ्वी पर नहीं रहे।

उपरोक्त विवरणों से स्पष्ट है राजा भोज (1010 - 1050 ई.) परमार वंश का एक प्रतापी शासक था।

आल्म व आडवरी के लेख के अनुसार उसके दरबार में लगभग 500 विद्वान रहते थे।
उसके दरबारी कवियों में भास्कर भट्ट, दामोदर भट्ट, धनपाल आदि कवि रहते थे।
उसकी प्रसिद्ध साहित्यिक रचनाएं - सरस्वती कंठाभरण, शृंगार प्रकाश, प्राकृत व्याकरण, तथा शब्दानुशासन प्रमुख हैं।

वास्तु शास्त्र पर आधारित पुस्तकें -
1. युक्ति कल्पतरु
2. समरांगण सूत्रधार।

शिक्षा संबंधी कार्य - उसने सरस्वती मंदिर एवं संस्कृत विद्यालय का निर्माण करवाया।

भोजताल का निर्माण - राजा भोज ने भोपाल के दक्षिण पूर्व में विशाल जलाशय का निर्माण करवाया जिसे आज बड़ा तालाब के नाम से जाना जाता है। यह भोज का एक स्मरणीय स्थल बना है।

सोमनाथ मंदिर - गुजरात के शासक भीम प्रथम के साथ मिलकर उसने सोमनाथ मंदिर का पुनः जीर्णोद्धार करवाया।

भोजपुर शिव मंदिर - भोजपुर में उसने शिव मंदिर का निर्माण करवाया। यहां प्रतिवर्ष शिवरात्रि के समय मेला आयोजित होता है।

38] म.प्र के मध्य युगीन इतिहास में परमार वंश का प्रतापी शासक सिंधुराज का पुत्र राजा भोज शस्त्र एवं शास्त्र में पारंगत था। उसके शासन काल में धार नगरी में साहित्य, कला, और संस्कृति की भारी उन्नति थी। उसके द्वारा किये गये कार्यों को निम्नलिखित रूप में वर्णित किया जा सकता है :-

साम्राज्य : राजा भोज का साम्राज्य विस्तार मालवा, भिलसा, बांसवाड़ा, चित्तौड़, उत्तर लाट, गोदावरी घाटी तथा कोंकण का कुछ भाग शामिल था। उसने प्राचीन राजधानी उज्जैनी से धार नगरी स्थापित किया।

विजय-पराजय : पारिजात मंजरी, उदयपुर प्रशस्ति तथा कालावन अभिलेख के अनुसार राजा भोज ने त्रिपुरी के कलचुरी, गांगेयदेव, शाकम्भरी के चौहान नरेश वीर्यराम को पराजित किया। किन्तु बुन्देलखण्ड के चन्देल, ग्वालियर के कच्छपघात वंश के कीर्तिराज गुर्जर के विरुद्ध युद्ध में असफल रहे।

रचनात्मक कार्य - रचनात्मक कार्यों के अन्तर्गत, कला, साहित्य, स्थापत्य, वास्तुकला एवं निर्माण कार्य शामिल है।

साहित्य - वह संस्कृत का विद्वान था। उसके सभा में कवियों को संरक्षण प्राप्त था।

राजवंशीय कुमार - उन्हें आर्यपुत्र भी कहा जाता था। प्रांतों का शासन उन्हीं पदाधिकारियों द्वारा होता था। प्रांतों को 'चक्र' कहा गया है, जो कई जिलों में विभाजित था।

मौर्य प्रशासन के स्तरीय स्तर : 1. केन्द्र - सम्राट,

2. प्रांत - प्रमुख अधिकारी - कुमार / आर्यपुत्र
3. मंडल - प्रमुख अधिकारी - प्रदेष्टा / प्रादेशिक
4. आहार या विषय - जिला प्रमुख अधिकारी - विषयपति या विषयक
5. स्थानीय - 800 गांवों का समूह
6. द्रोणमुख - 400 गांवों का समूह
7. खार्वटिक - 200 गांवों का समूह
8. संग्रहण - 10 गांवों का समूह
9. ग्राम - प्रशासन की सबसे छोटी इकाई - प्रमुख पदाधिकारी - ग्रामणी

ग्राम सभा - गोप नामक पदाधिकारी गांवों में दस गांवों, परिवारों का ब्यौरा तथा राजस्व संग्रहण का कार्य करता था। मेगस्थनीज एवं अन्य स्रोतों से प्राप्त लेखन में ग्राम शासन व्यवस्था की जानकारी मिलती है।

इस प्रकार चन्द्रगुप्त मौर्य ने विशाल साम्राज्य में एक लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की तथा कुशल प्रशासन का संचालन किया।

प्रशासन का सप्तांग सिद्धांत : कौटिल्य रचित 'अर्थशास्त्र' में सात अंगों की चर्चा की गयी है। ये सप्तांग हैं - राज्य (स्वामी) → अमात्य (मंत्री) → जनपद (जनता) → दुर्ग (किला) → कोष (खजाना) → दण्ड / बल / सेना (सैनिक) → मित्र (दोस्त)

सप्तांग सिद्धांत के अनुसार राज्य को एक जीव माना गया। जिस तरह स्वस्थ शरीर के संचालन के लिए उन अंगों का सही तरीके से कार्य करना आवश्यक है उसी प्रकार सफल राज्य संचालन के लिए ये आवश्यक।

तीर्थ - मौर्य काल में सर्वोच्च अधिकारी को तीर्थ कहा जाता था। अर्थशास्त्र में कुल 18 तीर्थों की चर्चा है।

प्रांतों का वर्गीकरण : चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने विशाल साम्राज्य के कुशल शासन संचालन के लिए चार भागों में प्रांतों का विभाजन कर रखा था।

विशाल मौर्य साम्राज्य → चार प्रांत →
- उत्तरापथ
- दक्षिणापथ
- अवंति
- प्राची

उत्तरापथ की राजधानी तक्षशिला, दक्षिणापथ की राजधानी सुवर्णगिरि तथा अवंति की राजधानी उज्जयिनी एवं प्राची (मध्य देश) की राजधानी पाटलीपुत्र थी।

उ. 13 - चन्द्रगुप्त मौर्य मगध में नंद वंश के शासक धनानंद को पराजित कर मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। उसने पहली बार भारत में एक महान एवं सर्वांगीण नियंत्रण एवं कल्याणकारी राज्य की स्थापना की।

उसका शासन काल 322 ई.पू. से 298 ई.पू. तक था। चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपनी प्रशासनिक नीतियों के माध्यम से विशाल साम्राज्य की स्थापना करने तथा बाह्य आक्रमण से राज्य की सुरक्षा करने में सफल रहा। चन्द्रगुप्त मौर्य की प्रशासनिक नीति में निम्नांकित तथ्य समाहित हैं।

प्रशासनिक नीति

- केन्द्रीकृत
- सप्तांगी राज्य
- प्रांतीय स्तरीकरण

केन्द्रीकृत शासन व्यवस्था - चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन का स्वरूप केन्द्रीकृत था जिसमें सर्वोच्च सत्ता राजा के पास निहित थी। किंतु वह स्वयं सेना द्वारा कल्याणकारी राज्य की स्थापना करने में समाहित था। शासन में न्याय आर्य शासन की सभी विशेषताओं का समावेश था, जो कि राजनीतिक ग्रन्थ में

- प्रशासन में ज़रीना एवं रासपुटिन का हस्तक्षेप - प्रशासनिक नियुक्तियों में जारीना एवं रासपुटिन पादरी (पादरियों) का हस्तक्षेप था जो नियुक्ति एवं पदोन्नति के निर्णय को प्रभावित करता था।
- भ्रष्ट नौकरशाही - नौकरशाही भ्रष्ट एवं अयोग्य थी यह केवल ज़ार को प्रसन्न करने में लगी थी।
- गैर रूसियों पर अत्याचार - ज़ार ने यहूदियों, पारसियों के प्रति अत्याचार एवं भेदभाव रखता था।

तात्कालिक कारण - देश में व्याप्त आर्थिक एवं राजनैतिक असन्तोष को हवा देने के लिए प्रथम विश्व युद्ध ने आग में घी का काम किया।

- आर्थिक संकट और अकाल - यातायात संकट की वजह से कृषि की आपूर्ति, सेना, मजदूर हताहत हुए
- ड्यूमा को भंग करना - संसद को भंग कर दिया गया।
- सेना का आंदोलनकारियों पर गोली चलाने से इंकार
- 11 मार्च 1917 को आंदोलनकारियों द्वारा जार शाही का घेराव किया जार के सहयोगियों पर हमला।

अन्य कारण - मार्क्स की समाजवादी विचारधारा का प्रभाव एवं बोल्शेविक दल के नेतृत्व ने रूस में क्रांति को सफल बनाया।

इन विवरणों से स्पष्ट होता है कि रूस की क्रांति में अनेक कारण विद्यमान थे। जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व को समाजवादी आर्थिक समानता के सिद्धांत पर बल दिया।

सामाजिक एवं आर्थिक कारण :

1. किसानों की दयनीय दशा :- रूस एक कृषि प्रधान देश था किंतु किसानों की दशा अत्यंत दयनीय थी। यद्यपि 1861 ई. में जार अलेक्जेंडर II ने कृषि दासों की मुक्ति की घोषणा की, किंतु उनकी स्थिति में सुधार न हो सका। कृषि भूमि का असमान वितरण था। जमींदारों के पास देश की आधी भूमि थी।

2. मजदूरों में असंतोष : रूस में भी औद्योगिक गति विधियां संचालित थी। अतिशय शोषण किया। उद्योग पतियों ने मजदूरों से न्यूनतम मजदूरी, काम के अत्यधिक घंटे के बदले। तथा किसी प्रकार की सामाजिक एवं आर्थिक सुरक्षा का अभाव था।

3. सरकारी नीतियों का दोषपूर्ण होना - आर्थिक सरकारी नीतियों से उद्योग पतियों एवं पूंजी पतियों के हितों की सुरक्षा की जाती थी। किसानों मजदूरों को उपेक्षित रहना पड़ता था। असंतोष का यह भी कारण था।

राजनीतिक कारण :

1. जार शाही की निरंकुशता - रूस के सम्राट अत्यंत निरंकुश थे, जो सत्ता के दैवीय सिद्धांत के समर्थक थे। पीटर महान कहता था, "जार पूरी दुनिया में किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं होगा।" इसी दमनकारी नीतियों को बढ़ावा मिलता था। अलेक्जेंडर III ने - एक जार, एक रूस, एक चर्च, का नारा दिया। जार निकोलस II भी पूर्ण तथा निरंकुश था।

<u>परिचय</u> 1986 - 64 योगिनी मंदिर, कंदरिया महादेव, देवी जगदम्बा मंदिर, लक्ष्मण मंदिर, चित्रगुप्त मंदिर, विश्वनाथ मंदिर एवं पार्श्वनाथ मंदिर आदि। मातंगेश्वर

<u>वास्तुकला शैली</u> - नागर शैली तथा अर्द्धमंडप गर्भगृह आदि।

खजुराहो में प्रति वर्ष 21 फरवरी से 26 फरवरी तक नृत्य महोत्सव का आयोजन होता है। वर्तमान 47 वां संस्करण 2021

<u>Q. 3</u>

3 A] रूस की क्रांति अपने समय की एकमात्र ऐसी ऐतिहासिक घटना जिसने तात्कालिक क्रांतियों के विपरीत सामाजिक आर्थिक समानता पर केंद्रित थी। इस क्रांति ने जनों को इस विचारधारा एवं विश्वास का संदेश दिया कि अब मनुष्य एक सत्ता नहीं है, और राजा या निरंकुश शासन की शक्ति दैवीय आधारित है।

रूसी क्रांति के अनेक कारणों एवं परिणामों को निम्न तरह से :-

<u>कारण</u> : इसमें क्रांति के पूर्व रूस ऐतिहासिक एवं तात्कालिक सामाजिक - आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि को समझा जा सकता है।

कारण

आधारभूत

1. सामाजिक
2. आर्थिक
3. राजनीतिक
4. सांस्कृतिक एवं बौद्धिक

तात्कालिक -

- प्रथम विश्व युद्ध में रूस का प्रवेश
- आर्थिक संकट

21] भारत में 1976 से पूर्व शिक्षा को उत्तरदायित्व राज्यों पर था किंतु 42 वां संविधान संशोधन 1976 द्वारा इसे समवर्ती सूची में रखा गया।
ब्रिटिश काल से आजाद भारत तक विभिन्न शिक्षा आयोग -
1. मैकाले का शिक्षा पत्र - 1835 शिक्षा को माध्यम अंग्रेजी भाषा पर जोर दिया।
2 वुड का डिस्पैच - 1854 - भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा
3. भारतीय शिक्षा आयोग - 1882 - सर विलियम हंटर - माध्यमिक शिक्षा में विविधीकृत पाठ्यक्रम।
4. विश्व विद्यालय आयोग - 1902 ई. लार्ड कर्जन
5. सैडलर आयोग 1917 - माध्यमिक शिक्षा को विश्व विद्यालय के क्षेत्र से बाहर रखना।
6. . हार्टोग आयोग 1929 -
इसके अतिरिक्त सार्जेंट आयोग (1944) राधा कृष्णन आयोग 1948 तथा नई शिक्षा नीति 2020 का गठन हुआ।

21c] चंदेल शासकों द्वारा 950 - 1050 ई में निर्मित खजुराहो के विश्व प्रसिद्ध मंदिर अपनी वास्तुकला एवं स्थापत्य कला के लिए विश्व विख्यात है। यह हिन्दू, जैन तथा यहाँ के आदि धर्म का प्रमुख स्थल है।
यहाँ के मंदिर समूहों को तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है -
1 पूर्वी मंदिर समूह :- पार्श्वनाथ, आदिनाथ, शांति, घंटाई के मंदिर है।

इस प्रकार ग्रामीण प्रशासन को संचालन के लिए प्रत्येक गाँव को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में संगठित किया गया।

इसके लिए राज्य द्वारा 12 अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी। उन्हें कर मुक्त भूमि देकर ग्रामीण व्यवस्था को शासन प्रणाली सुनिश्चित की गई।

2 i] भारतीय इतिहास में दो सम्राट, एक सम्राट अशोक और दूसरे सम्राट अकबर ने परिभाषित किया, और धर्म को नये ढंग से धार्मिक व्यवस्था लागू किया। कुशल प्रशासक हेतु चतुर धार अकबर की धार्मिक नीति निम्न वत ...-

- दीन ए इलाही नामक नवीन धर्म की स्थापना
- स्वतंत्र चिंतन एवं एकेश्वर वाद को बढ़ावा
- जजिया कर का समापन कर हिन्दु मुस्लिम एकता को स्थापित करने में सफलता।
- सुलह - ए - कुल की नीति का अनुसरण।
- पृथ्वी तथा सूर्य की उपासना करना
- धार्मिक सभाएं का आयोजन करना
- उदार धार्मिक नीति के अकबर ने 1562 ई में हटाया, 1563 ई. में तीर्थ यात्रा कर तथा 1564 में जजिया कर समाप्त किया।

इस प्रकार अकबर ने शासन व्यवस्था में धर्मनिरपेक्ष वादी रूप अपनाया।

वस्तुओं के मूल्यों में नियंत्रण - आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में बाजार की मांग आपूर्ति के बदलने पर भी के बजाय स्थिर रखा गया। जिससे व्यापक युद्ध पर भी जीवन निर्वाह सुनिश्चित हो सके।

बाजार नियंत्रण व्यवस्था में व्यापारियों को व्यापार करने के लिए पंजीकरण व शिवायत में पंजी करना होना आवश्यक था। शहना-ए-मण्डी बाजार का दरोगा होता था।

अलाउद्दीन खिलजी को सार्वजनिक वितरण प्रणाली का जनक माना जाता है।

अनाज के भंडारण के लिए बड़े-बड़े गोदाम बनाये। साथ ही बाजार व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए कठोर दण्ड व्यवहार एवं आक्रामक लोगों की नियुक्ति कर बाजार में नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया।

2य]

विजयनगर को शासन व्यवस्था जाना जाता है। यहाँ स्थानीय प्रशासन के लिए नायक थे। आयगार 12 ग्रामों में आयगार व्यवस्था जिनकी नियुक्ति राजा द्वारा किया जाता था। वेतन के बदले भूमि दी जाती थी, उन्हें उत्पादन कर सकते थे। जिससे वे ... होता था। उन पद को वे बेच सकते थे। यह पद वंशानुगत होता था।

2F] कलिंग विजय पश्चात् अशोक ने 'युद्ध नीति' का परित्याग एवं 'धम्म नीति' का अनुसरण किया। उसकी धम्म नीति की विशेषताएं 'बहुजन हिताय एवं बहुजन सुखाय' की नींव पर आधारित थी।

धम्म नीति नैतिकता एवं मानवता के उच्च आदर्शों पर केन्द्रित थी। अशोक के धम्म के प्रमुख लक्षण -

1. पाप हीनता (प्रथम स्तम्भ लेख)
2. बहु कल्याण (द्वितीय स्तम्भ लेख)
3. आत्म निरीक्षण (तृतीय स्तम्भ लेख)
4. अहिंसा, सत्य भाषण (चतुर्थ स्तम्भ लेख)
5. धर्मानुशासन, धर्म मंगल, कल्याण, दान, शौच (तृतीय पटल)

बुद्ध के धम्म को प्रचार प्रसार के लिए उसने धर्म-अधिकारियों की व्यवस्था की। तथा विभिन्न लेखों, स्तम्भों से स्वयं उस धम्म का प्रचार किया।

2G] अलाउद्दीन खिलजी ने आर्थिक सुधारों के लिये बाजार नियंत्रण प्रणाली लागू किया। जिसके अनुसार वस्तुओं के मूल्य का निर्धारण, उत्पादन, वितरण, भंडारण एवं उपयोग पर प्रभावशील नियंत्रण था।

बाजार नियंत्रण प्रणाली

- वस्तुओं के मूल्यों पर नियंत्रण
- वितरण की व्यवस्था
  - दीवान-ए-रियासत
  - नायब-ए-रियासत
- बाजार का मंडीकरण व्यवस्था & कमबंदी

Q5] बौद्ध धर्म और जैन धर्म में तुलना एक अध्ययन हेतु- उनके मध्य समानताओं एवं असमानताओं को शामिल करते हो।

समानताएं - अनीश्वरवादिता, कर्म - पुनर्जन्म में।

उद्भव - उत्तर वैदिक काल में। विरोध

आधार - नैतिकता और सदाचार

खंडन - कर्मकांड, मूर्ति पूजा, पाखंड

जीवन का अंतिम लक्ष्य - मोक्ष प्राप्ति।

परवर्ती काल में विभाजन

बौद्ध धर्म < हीनयान, महायान   जैन धर्म < दिगंबर, श्वेतांबर

असमानताएं -

- अहिंसा < जैन धर्म - तीव्र अहिंसा पक्षी; बुद्ध धर्म - उदार अहिंसा पक्षी
- भाषा प्रयोग - जैन धर्म - प्राकृत अपितु बुद्ध धर्म
- बुद्ध ने पालि में की।
- बुद्ध द्वारा जाति प्रथा की कठोर निंदा जबकि महावीर ने नहीं की।

इसके अतिरिक्त बुद्ध और जैन धर्म में अनेक समानताएं व असमानताएं जैसे मुक्ति का मार्ग (मध्यम मार्ग) व कठोर साधना तथा त्रिरत्न एवं उपदेशों समानताएं व असमानताएं व्याप्त है।

नवीन प्रणाली उपकरण तथा विपणन जैसे। द्वितीय आधार

औपनिवेशिक स्थिति - ब्रिटेन मुख्य सागर के व्यापारिक मार्ग पर स्थित होने से व्यापारिक रूप विस्तार सरल तथा व्यापारिक व्यवस्था सुदृढ़ थी।

सुदृढ़ बैंकिंग व्यवस्था - उद्योगों को स्थापित करने के लिए - पूंजी या पूंजीगत उपलब्धता।

उपनिवेश : कच्चे माल की उपलब्धता तथा निर्मित उत्पादों की खपत के लिए पर्याप्त था।

इसके अतिरिक्त नगरों का उदय, श्रमिक वर्ग, नवीन मशीनी उपकरणों पर नगरों का काम करना आदि अनेक परिस्थितियों से सफल औद्योगिक क्रांति के लिए उत्तरदायी है।

2(c) फ्रांसीसी क्रांति (1789 - 1793) में आर्थिक कारणों की भूमिका निम्न थी -

कर व्यवस्था - राज्य के सबसे कर राजस्व का भार तृतीय स्टेट अर्थात सामान्य साधारण वर्ग पर था।

कर से मुक्त - पादरियों एवं कुलीनों को कर से छूट प्राप्त थी।

कृषि भूमि - पादरियों एवं कुलीनों के पास कुल भूमि का 60% भाग था। जबकि साधारण वर्ग के पास मात्र 4% की ही भूमि थी।

संपत्ति एवं पूंजी - कुलीन सामंतों ने अपनी भूमियों पर मनमाने लगान की स्वतंत्रता, जबकि साधारण वर्ग शोषित था।

इन कारणों के अतिरिक्त महंगाई, अकाल तथा भुखमरी ने फ्रांसीसी क्रांति को जन्म दिया।

पेट्रार्क (कवि) बोकेशियो (गद्य लेखक) ने मानव वादी साहित्यों की रचना कर, अंधकार युग पोपशाही व धर्म की कमियों को उजागर किया।

कला - नवीन मूर्तिकार चित्रकारों ने प्रकृति और मानव को केन्द्र में रखकर चित्रकारी किया। माईकल-एंजेलो (पेंटर) लियोनार्डो द विंची (मोनालिसा) आदि

विज्ञान - वैज्ञानिकों ने मानव शरीर रचना की व्याख्या प्रस्तुत किया, जिसके आधार पर विज्ञान क्षेत्र में मानव परिवर्तन तंत्र की व्याख्या था।

इसके अतिरिक्त आधार व्यापार में व्यापक वर्ग वर्गों की चिंता जिससे नवीन अनुसंधान तथा खोजों का मार्ग प्रशस्त हुआ।

Q3: 1750 से 1850 ई. के मध्य ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति हुई। इसके कारण निम्न है-

1. राजनीतिक एवं वित्तीय स्थिरता - गौरवपूर्ण क्रांति का प्रभाव पंजी के रूप में व्यापक और स्थिर रहा। स्वतंत्र विचार एवं प्रयोग को बढ़ावा मिला।
2. कच्चा लोहा और कोयले - इनकी खानों का समीप होना। जिससे आसानी कर लौह मशीन एवं उपकरण का विकास अच्छा हुआ।
3. तकनीकी ज्ञान - नई कुशल कारीगरों ने तकनीकी की

1.1] मंदसौर अभिलेख एक शिलालेख है जिसका संबंध यशोवर्मन विष्णुवर्धन से है। यह संस्कृत भाषा एवं गुप्त लिपि में लिखा गया। काल 532 ई

1.M] 'शक्ति का पृथक्करण' का सिद्धांत, फ्रांसीसी दार्शनिक 'मॉन्टेस्क्यू' ने अपनी पुस्तक 'द स्पिरिट ऑफ लॉज़' में दिया। अर्थात् - कार्यपालिका एवं न्यायपालिका के मध्य शक्तियों का विभाजन।

1.N] राफेल पुनर्जागरण काल के इटली का प्रसिद्ध चित्रकार, प्रसिद्ध चित्र - मैडोना। सिस्टीन चैपल की छत पर चित्रांकन। [illegible] - नारी [illegible]

1.O] आरम्भिक प्राचीन बौद्ध दार्शनिक, बुद्ध चरित की रचना तथा चतुर्थ बौद्ध संगीति की (कुंडल-वन) की अध्यक्षता की

Q. 2

2.A] इतिहास में चौदहवीं से सत्रहवीं शताब्दी तक के काल को पुनर्जागरण का काल माना गया है। यह एक परिवर्तन काल था जो मध्यकाल के अंधकार-युग से निकलकर आधुनिक युग के आगमन का था जिसका प्रभाव यूरोप में प्रवेश करती है। जिसका प्रभाव यूरोप के कला, साहित्य, विज्ञान, राजनीति आदि में था।

प्रभाव - साहित्य - दांते (डिवाइन कॉमेडी)

[F]. कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन सन 1920 में हुआ। इसमें गांधी जी के असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव स्वीकार किया।

[G] 1831 ई में छोटा नागपुर में 'बुद्धो' भगत के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध कोल विद्रोह हुआ। कारण - कोलों की भूमियां सिक्खों (बाहरी) को देना था।

[H]. सूरत अधिवेशन '1907' में हुआ। अध्यक्ष - रास बिहारी घोष। कांग्रेस का नरम व गरम दल में विभाजन।

[I] तात्या टोपे (रामचन्द्र पाण्डुरंग) नाना साहब के सेनानायक। 1857 की क्रांति में झांसी की रानी का साथ दिया। समाधि - शिवपुरी में।

[J] रानी दुर्गावती गढ़ मण्डला की शासिका, गोंड शासक दलपत शाह की पत्नी, वीर नारायण की संरक्षिका थी। आसफ खाँ (मुगल सेनापति) से हारीं, जबलपुर के पास युद्ध में वीरगति प्राप्त।

[K] नागदा मध्य प्रदेश के उज्जैन जिले से 30 मील उत्तर-पश्चिम में चंबल नदी के तट पर स्थित पुरातात्विक स्थल है। यहां से ताम्र युगीन सभ्यता के साक्ष्य मिले - जैसे नाली, कुल्हाड़ी, कृपाण, तलवार आदि।

हरिवंश   पेपर - 1   20-02-2021

Q-1.

1A. 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण करने वाला चन्द्रगुप्त II गुप्त वंश का प्रतापी शासक था। शासनकाल 380-412 ई. तक। आगमन - फाह्यान (चीनी यात्री)

1B. 'लोथल' सिंधु घाटी सभ्यता का गुजरात में स्थित एक 'बंदरगाह' था, जो भोगवा नदी के तट पर स्थित था। प्राप्त - धान की भूसी, चावल व बाजरे का साक्ष्य, नौका युगल समाधियां आदि। खोजकर्ता - डॉ. एस. आर. राव (1955)

1C. उपनिषद का अर्थ - गुरु के समीप बैठना। वेदों की सारणी का प्रकरणों का ग्रन्थ। प्रमुख उपनिषदों की संख्या - 11। भारत का राष्ट्रीय - 'सत्यमेव जयते' मुण्डकोपनिषद से गृहीत।

1D. खिज्र खाँ, मुल्तान के गवर्नर मलिक मर्दान का पुत्र था। सैयद वंश की स्थापना। 'तारीख-ए-मुबारक शाही' में उसे 'सैयद' बताया गया। तैमूर लंग की सहायता की।

1E. नूरजहाँ (जहाँगीर की पत्नी) बचपन का नाम 'मेहरुन्निसा' था। 1611 ई. में जहाँगीर से विवाह। निर्माण - एत्मादुद्दौला का मकबरा,